वैदिक साहित्य का विस्तृत विवरण

[A] ऋग्वेद

(a) संहिताएँ

1 ऋग्वेद की पाँच संहिताएं है → शाकल, वास्कल, ~~अश्वल~~ अश्वलायन, शांखायन, माण्डूक्य

2. ऋग्वेद के विभिन्न संहिताओं में केवल शाकल संहिता ही आज भी प्राप्त है। जिसमे 10028 सूत्र (कुछ लोगो के अनुसार 1017) जो दस मण्डलों और आठ अष्टकों में विभाजित है।

3. शाकल संहिता मे दो से सात मंडल सबसे प्राचीन है और वे गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज और वशिष्ठ परिवार की रचनाएं है।

4. नौवे मंडल मे ऐसी सभी ऋचाओं का संकलन है जो पहले अन्य मंडलो मे सोम को सम्बोधित करके गायी गयी है।

5. पहले और दसवे मंडल सबसे पिछे जोडे गये है।

6. दसवा मंडल पुरुष सूक्त है जिसमे ब्रह्मा के मुख से भुजाओं, जंघाओ, और पैरों से चारो वर्णों अर्थात क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शुद्र की उत्पत्ति का उल्लेख है।

NOTE [I] शुद्र का उल्लेख पहली बार दसवा मंडल मे मिलता है

[II] गायत्री मंत्र ऋग्वेद मे मिलता है

[III] दसराज्ञ युद्ध की चर्चा सातवे मंडल मे है।

[IV] अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपा मुद्रा वैदिक ऋचाओं की ~~वर्बार~~ ~~थी~~ रचयिता थी।

(b) ब्राह्मण ग्रंथ →

1. ऋग्वेद के दो ब्राह्मण है — ऐतरेय और कौषीतकी

2. ऐसा माना जाता है कि ऐतरेय ब्राह्मण महिदास की रचना है इसमे मुख्यतः बडे-बडे सोम-स्तवो का वर्णन है तथा राज्याभिषेक की विभिन्न यज्ञीय विधानो की चर्चा है।

3. कौषीतकी को ही संख्यायन ब्राह्मण कहा जाता है जिसमे केवल सोम यज्ञों का ही नही बल्कि अन्य

Scanned with CamScanner

अनेक यज्ञों का भी वर्णन है।

C- आरण्यक और उपनिषद

1. ऐतरेय ब्राह्मण का ऐतरेय आरण्यक है जिसमें ऐतरेय उपनिषद भी सन्निहित है
2. कौषितकी ब्राह्मण में कौषीतकी आरण्यक है जिसका एक भाग कौषीतकी उपनिषद कहलाता है।

(B) - सामवेद

(a) संहिताएं

1. पुराणों में सामवेद की हजार शाखाओं का उल्लेख है किन्तु उनमें से केवल एक ही आज उपलब्ध है जिनकी तीन वाचनाये है। वे है
   - [i] गुजरात की कौथुम
   - [ii] कर्नाटक की जैमिनीय
   - [iii] महाराष्ट्र की राणायनीय
2. इनमें उन ऋचाओं का संग्रह है जिन्हे सोमयज्ञ के समय उद्गाता गाते थे। इन ऋचाओं की संख्या 1810 है और यदि पुनरुक्तियों को छोड़ दे तो 1549 है किन्तु 75 को छोड़कर शेष सभी ऋचाएं ऋग्वेद की संहिता की है। ऋग्वेद में न मिलने वाली 75 ऋचाओं में से कुछ तो अन्य संहिताओं में और कुछ विभिन्न ब्राह्मणों अथवा कल्प साहित्य में पायी जाती है।
3. ये पाठ केवल स्वर-माधुर्य के निमित्त होते थे और साम वेद के अनुयायीयों के लिए इसका ही महत्व था।
4. इस प्रकार जहां सामवेद का महत्व भारतीय संगीत की इतिहास की दृष्टि से अमिट है और वह यज्ञ विधानो के प्रकाश पर रोचक प्रकाश डालता है वही साहित्य की दृष्टि से इसका मूल्य प्रायः नगण्य है।

(b) ब्राह्मण -

[I] - ताण्ड्यमहाब्राह्मण -

इसका एक अलग नाम पंचविंश ब्राह्मण है पंचविंश का अर्थ होता है 25 अध्यायों वाला यह प्राचीनतम ब्राह्मणों में से है और सबसे महत्व का है इसमें बहुत सी प्राचीन अनुश्रुतियां संकलित और उसमें ब्रात्यस्तोम विधि का वर्णन है। जिसके द्वारा अनार्यों को आर्य परिवार में सम्मिलित किया जा सकता था।

[II] षड्विंश ब्राह्मण (26वां ब्राह्मण) — यह पंचविंश ब्राह्मण का एक परिशिष्ट मात्र है जिसका अंतिम भाग अद्भुत ब्राह्मण कहा जाता है और वह वेदांग साहित्य है इसमें अलौकिक बातों की चर्चा है।

[III] जैमिनीय ब्राह्मण — इस ग्रंथ के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

C आरण्यक और उपनिषद

[I] छान्दोग्य उपनिषद → इसका पहला भाग एक आरण्यक मात्र है जिसका सम्बन्ध सामवेद के ब्राह्मण सम्भवतः ताण्ड्यमहाब्राह्मण से है

[II] जैमिनीय उपनिषद - यह सामवेद की जैमिनीय अथवा तलवकार शाखा का आरण्यक है और केनोपनिषद भी उसका एक अंश है जो तलवकार उपनिषद भी कहा जाता है

C - यजुर्वेद

(a) संहिताएं - वैयाकरण पतंजली ने यजुर्वेद की 101 शाखाओं का उल्लेख किया है किन्तु इस समय निम्नलिखित पांच शाखाओं का ही पता है। —

(I) कठ शाखा की काठक संहिता

[II] कपिष्ठल - कठ - संहिता

[III] मैत्रायणी शाखा की मैत्रायणी संहिता

[IV] तैत्तिरीय शाखा की तैत्तिरीय संहिता

[V] वाजसनेयि संहिता - जो काण्व और माध्यन्दिन शाखाओं मे विभाजित है

Note इसमे प्रथम चार कृष्ण यजुर्वेद की है जबकी अंतिम शुक्ल यजुर्वेद की है।

2. शुक्ल एव कृष्ण यजुर्वेद मे मुख्य भेद यह है कि शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयि संहिता मे केवल मन्त्र, शुक्ल सूक्त और यज्ञीय सूत्र है तथा कृष्ण यजुर्वेद की संहिताओं मे इनके अतिरिक्त गद्य भाष्य भी है जिनकी गणना वस्तुतः ब्राह्मणों मे होनी चाहिए।

3- वाजसनेयि संहिता मे 40 अध्याय है और लगभग 2000 मन्त्र है। जिनमे कितनी ही पुनरावृत्तियां है इनमे ऋग्वेद और अथर्ववेद की अनेक ऋचाएं तथा गद्य मे लिखे यज्ञ विधान है।

4. जिस प्रकार सामवेद संहिता के उद्गाताओं द्वारा गायी जाने वाली ही ऋचाएं है उसी प्रकार यजुर्वेद संहिता मे केवल वे पाठ है जिन्हे अध्वर्यु महत्वपूर्ण यज्ञों के समय पढ़ते थे

(b) - ब्राह्मण -

(I) तैत्तिरीय ब्राह्मण - यह ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेद का है। पहले ही कहा जा चुका है कि कृष्ण यजुर्वेद मे संहिता और ब्राह्मण दोनो ही सम्मिलित है अतः तैत्तिरीय ब्राह्मण मे केवल वे ही अंश है जो पिछे से तैत्तिरीय संहिता मे जोडे गये है।

[II] सतपथ ब्राह्मण → यह ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का है यह सबसे बड़ा ही नही बल्कि ब्राह्मणो मे सबसे महत्वपूर्ण का भी ही यह वाजसनेयि

संहिता की टीका है और उसी तरह इसकी भी काण्व और माध्यान्दीन शाखाएं हैं सतपथ ब्राह्मण न केवल प्राचीन भारत के यज्ञ विधानों की जानकारी का एक महत्वपूर्ण साधन है बल्कि इससे तत्कालीन धर्म और दर्शन, विचार धारा रहनसहन और रीति-रिवाजों का भी पता चलता है।

(C) आरण्यक और उपनिषद — (i) तैत्तिरीय आरण्यक तैत्तिरीय ब्राह्मण का ही विस्तार है इसके अंतिम भाग है तैत्तिरीय उपनिषद और महानारायण उपनिषद

(ii) सतपथ ब्राह्मण के 14वे काण्ड का पहला अध्याय वस्तुतः एक आरण्यक है और इसका अंतिम अंश सुप्रसिद्ध बृहदारण्यक उपनिषद है।

(iii) काठक उपनिषद कृष्ण यजुर्वेद का है

(iv) ईशोपनिषद वाजसनेयि संहिता का अंतिम भाग है।

(v) श्वेताश्वतरोपनिषद कृष्णयजुर्वेद का है

(vi) मैत्रायणी उपनिषद का भी सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद से है।

D अथर्ववेद

(a) संहिता —

(i) इसकी दो शाखाएं हैं —— शौनकीय और पैप्पलाद

[ii] पैप्पलाद अत्यंत अपूर्ण मे ज्ञात है।

[iii] शौनकीय शाखा की संहिता मे 731 (कुछ लोगो के अनुसार 760) ऋचाएं है। जो 20 मंडलो मे विभक्त है अंतिम के तीन मंडल पिछे से जोड़े गये है इस संहिता मे कितनी ही ऋचाए है जो ऋग्वेद मे भी है।

[iv] इसके अधिकांश वशीकरण, जादूटोना और मन्त्र सूक्तो का वर्णन है जिनसे भूतो और शत्रुओ पर विजय पायी जा सकती है, मित्र लाभ किया जा सकता है और भौतिक सफलताएं प्राप्त की जा सकती है इन कारण इस संहिता की गणना बहुत दिनो तक वैदिक साहित्य मे नही होती थी इसके कितने ही लोक धर्म

और अन्धविश्वास सुरक्षित है।

(b) ब्राह्मण — अथर्ववेद से सम्बद्ध ब्राह्मण वैसा कोई प्राचीन ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। गोपथ ब्राह्मण को ब्राह्मण तो अवश्य कहते हैं पर वास्तव में वह वेदांग है और बहुत पीछे का ग्रंथ है।

C आरण्यक और उपनिषद्

इसके तीन उपनिषद् है (i) – मुण्डकोपनिषद
(ii) प्रश्नोपनिषद
(iii) माण्डुक्योपनिषद

Scanned with CamScanner